DEPARTMENT OF MUSIC
INSTRUMENTAL

PRESENTED BY:
DR.ANAMIKA DIXIT

Semester IV
Paper Code: 221
Unit - 1

रागों का सम्पूर्ण परिचय

- राग जैजैवन्ती
- राग केदार
- राग मुलतानी
- राग बिहाग

राग जयजयवन्ती

“खमाज थाट जयजयवन्ती,दो गन्धार निषाद।
रे प संवाद जाति-सम्पूर्ण, प्रथम रात्रि के बाद।।”

इस राग की उत्पत्ति खमाज़ थाट से मानी गई हैं।इसमें दोनों गंधार दोनों निषाद प्रयोग किए जाते हैं।जाति सम्पूर्ण – सम्पूर्ण हैं।वादी ऋषभ और संवादी पंचम है।रात्रि के दूस प्रहर के अन्तिम भाग में इसे गाया बजाता है।

विशेषताः- 1: आरोह में पंचम के साथ शुद्ध निषाद और धैवत के साथ कोमल निषाद प्रयोग किया जाता है, जैसे- म प नी सां, धं नि रें। किन्तु अवरोह में सदैव कोमल निषाद प्रयोग किया जाता है।

2: इस राग की प्रकृति गम्भीर है तथा चलन तीनों सप्तको में होती है।इसमें बड़ा ख्याल छोटा ख्याल व ध्रुपद, धमार सभी शोभा देते हैं।

3:कोमल गंधार का अल्प प्रयोग केवल अवरोह में दो ऋषभों के बीच होता है।जैसे: रे ग रे सा ।

: इसमें प रे की संगती प्रचुरता से होती है। प रे में पंचम मन्द्र सप्तक का होना चाहिए। दोनों स्वर मध्य सप्तक के नहीं होते।अगर पंचम मध्य सप्तक का है तो ऋषभ तार सप्तक का होगा ।

: इसे परमेल प्रवेशक राग कहा जाता है।इसका कारण यह है कि राग रात्रि के दूसरे प्रहर के अन्तिम समय में गाया बजाया है। इस राग के पश्चात काफी थाट के रागों का समय प्रारम्भ होता है। इसमें खमाज और कोफी दोनों थाटों के स्वर लगते हैं। शुद्ध गन्धार खमाज थाट का और कोमल गन्धार काफी थाट का परिचायक है।

: यह राग क्रमशः दो अंगो से गाया जाता है- देश और बागेश्वरी । देश अंग के आरोह में धैवत वर्ज्य कर शुद्ध नी प्रयोग करते हैं, जैसेःरे ग म प नि सां।किन्तु बागेश्वरी के आरोह में केवल कोमल नि प्रयोग करते हैं। देश अंग की जयजयवन्ती , जिसके बीच में कभी कभी बागेश्वरी अंग भी दिखा देते हैं, प्रचार में अधिक है।

न्यास के स्वर:- सा,रे और प।

समप्रकृति राग:- देश।

राग केदार

“दो मध्यम अरू शुद्ध स्वर , मानत थाट कल्याण।
म-सा वादी संवादी से, राग केदार बखान।।”

इस राग को.कल्याण थाट से जन्य माना गया है। इसमें दोनों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं।इसका वादी मध्यम तथा संवादी षड्ज है।आरोह में रे ग और अवरोह में ग स्वर वर्ज्य है,इसलिए इसकी जाति औडव-षाडव है। इसके गाने बजाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।

विशेषताः- 1; तीव्र म आरोह में पंचम के साथ और शुद्ध म आरोह-अवरोह दोनों में प्रयोग किया जाता है।कभी कभी अवरोह में ध से म को आते समय मीड़ के साथ दोनों में एक साथ प्रयोग किया जाता है जो अति मधुर लगता है।

2:राग विवरण के अन्तर्गत यह बताया गया है कि इस राग में गन्धार स्वर वर्ज्य हैं,किन्तु अवरोह में कभी कभी मध्यम पर ग का कण लगाया जाता है, जैसे-सा म ऽ ऽ ग प।इस कण के प्रयोग से राग की सुन्दरता बढ़ती है ।

: हमीर के समान इस राग में भी कभी कभी अवरोह में सुन्दरता बढ़ाने के लिए
कोमल नि विवादी स्वर के रूप में प्रयोग किया जाता है।
: इसकी चलन वक्र हैं।
यास के स्वरः- सा म और प ।
समप्रकृति रागः- हमीर और कामोद ।

राग मुलतानी

"तीवर मध्यम कोमल रिगध, आरोहन रि ध हानि ।
प स वादी सम्वादी ते, गुन गावत मुलतानी।।"

मुलतानी की उत्पत्ति तोड़ी थाट से मानी गई हैं। इसमें रे, ग, ध स्वर कोमल तथा मध्यम तीव्र लगता है। वादी स्वर पंचम तथा सम्वादी षड्ज है। आरोह में ऋषभ और धैवत स्व वर्ज्य है, किन्तु अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किए जाते हैं।अतः इसकी जाति औडव-सम्पूर्ण है। इसे दिन के चौथे प्रहर में गाते बजाते हैं।

विशेषता:- 1: मुलतानी में बहुधा आलाप तान मन्द्र निषाद से प्रारम्भ करते हैं।

2: जब कभी मन्द्र निषाद से मध्य ग को जाते हैं तो सर्वप्रथम तीव्र म को स्पर्श करते है और तत्पश्चात मींड़ के साथ गंधार पर जाते हैं।

3: इस राग का चलन मन्द्र , मध्य, तार तीनों सप्तकों में समान रूप से होती हैं।

: इसे परमेल प्रवेशक राग माना गया है कारण है कि यह दिन के चौथे प्रहर का अन्तिम राग है। इसमें कोमल गंधार के साथ साथ कोमल रे और ध भी प्रयोग किए जाते हैं।ऋषभ कोमल होने से सन्धिप्रकाश रागों के वर्ग में आता है। इसमें दिन के चौथे प्रहर की तथा सन्धिप्रकाश समय दोनों की विशेषता है।

: मुलतानी में ऋषभ-धैवत शुद्ध कर देने से मधुवन्ती राग हो जाता है।

यास के स्वरः- सा,ग,प और नि ।

समप्रकृति रागः- तोड़ी।

राग बिहाग

राग बिहाग बिलावल थाट जन्य राग है। यह एक गम्भीर प्रकृति का अत्यन्त ही जनप्रिय राग है,इसमें सभी स्वर शुद्ध प्रयोग किये जाते हैं। इसके आरोह में रे और ध स्वर वर्जित है,तथा अवरोह में सभी स्वर प्रयोग किए जाते हैं,अतः इसकी जाति औडव-सम्पूर्ण हैं।

इस राग का वादी स्वर गन्धार और सम्वादी स्वर निषाद है।प्राचीन काल में राग बिहाग में तीव्र म का प्रयोग विवादी स्वर के रूप में किया जाता था, किन्तु आजकल बिहाग का जो स्वरूप प्रचलित हैं, उसमें तीव्र म.का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है और उसे अनुवादी स्वर की तरह प्रयोग किया जाता है। इस राग का चलन तीनों सप्तक में समान रूप से होता हैं।इसका प्रारम्भ ज्यादातर मन्द्र नि से करते हैं। इसमें कल्याण और बिलावल स्वर संगीतियों का मिश्रण है।

न्यास के स्वरः- सा,ग,प और नि।